सूखी डाली एकांकी के लेखक ने मनोवैज्ञानिक, शिल्प का अंकलन किया है वर्तमान युग के मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार की समस्या को यहां उद्घाटित कर प्रस्तुत किया गया है। व्यक्ति को समाज से हटकर यदि आदर सम्मान दिया जाये तो वह उसके लिए वह पीड़ादायक होता है, बेला के माध्यम से लेखक ने इसे सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक ने इस एकांकी के माध्यम से संयुक्त परिवार प्रणाली का समर्थन किया है।

निष्कर्ष :— निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं, कि एकांकी तत्व अथवा कला की दृष्टि से यह एकांकी पूर्णतः सफल है। इसमें मध्यमवर्गीय परिवार की झांकी प्रस्तुत कि गयी है।"

दूसरी ओर द्वारा मुलराज की भाषा शैली गम्भीर तथा दार्शनिक है। मसखरी वह के कथोप कथनों में खिली - खिली, - गिटपिट, मारामार, गुटर गटर आदि शब्दों के प्रयोग इसकी है

अभिनेयता एवं रंग संकेतिकता :-

'अश्क' जी के एकांकी रंगमंच की दृष्टि से सफल है इनकी सभी एकांकी को भी रंगमंच पर सहज रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसमें कोई भी घटना ऐसी नहीं है जिसे रंगमंच पर सफलता पूर्वक प्रस्तुत न किया जा सके। फर्नीचर का हिल जाना, बड़ की डाली का लगाया जाना, कपड़े धोना, हुक्का गुड़गुड़ाना आदि सभी सहजता पूर्वक अभिनय किया जा सकता है। एकांकी के आरम्भ में लेखक ने रंग मंच की सज्जा के विस्तृत संकेत दिये है। इससे मंच की साज सज्जा से अभिनेताओं को विशेष सहायता मिलती है। पात्रों के कथोपकथन के आरम्भ में मुख मुद्रा आदि के संकेतों से अभिनेताओं को विशेष सहायता मिलती है। यथा — (क्रोध से), (आश्चर्य से), (भरे हुए गले से), (मुँह बिचकाकर, व्यंग्य से) इत्यादि

उद्देश्य —

इस एकांकी के संवाद बहुत ही संक्षिप्त हैं। लम्बे पुन-
। के एक दो संवादों को छोड़कर सभी संवाद
अति संक्षिप्त हैं। इसके साथ-साथ इसके संवाद में
नाटकीयता का गुण भी दिखाई पड़ता है। एक
उदाहरण संक्षिप्त संवाद योजना की निम्नलिखित है-

" कर्मचन्द — लेकिन शायद आप इस पेड़ से एक डाली टूटकर अलग हो जायेगा

दादा — (चिंता से) क्या कहते हो? कौन अलग हो रहा है?

कर्मचन्द — शायद छोटा अलग हो जायेगा

x x x x x x x

देश काल और वातावरण :-

एकांकी में मध्यम वर्गीय परिवार का चित्र है। अतः लेखक ने पात्रों की वेश-भूषा पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझी। वह वातावरण में स्वाभाविकता तथा सजीवता लाने के लिए प्रयत्नशील रहा है। इस के लिए उसने कपड़े धोने की पट-पट तथा हुक्के गुड़गुड़ाहट ध्वनि को पकड़ने का प्रयास किया है।

भाषा शैली :-

सूखी डाली की भाषा सहज-सरल एवं बोधगम्य है। इस एकांकी में भाषा के कारण कहीं भी बोझिलता नहीं आने पायी है। भाषा भी पात्रों के अनुरूप है। मझली बहू की भाषा सरल-स्पष्ट तथा थोड़ी बहुत गंवारूपन है कहीं

करती है। इस प्रकार की बातें [illegible] से बेला परेशान हो जाती है। उसका मन ऊब जाता है वह घर के सभी सदस्यों के लिए अजनबी बन जाती है। दूसरी तरफ दादा मूलराज का चरित्र का चित्रण इस एकांकी में मुख्य केन्द्र रहा है। वह अपने घर को अलग रहते नहीं देख सकते है वह काफी अनुभवी, और समझदार एवं एकत्रित मनोभाव से अपने घर को एकत्रित करने का भरपूर प्रयास करते है और इसमें उनको सफलता भी मिलती है। उन्हीं के प्रयास से बेला का हृदय परिवर्तन होता है। सभी लोग मिल-जुल कर रहते है।

पात्रों की संख्या इस एकांकी में सीमित है। इसे दो भागों में विभाजित किया जा सकता है — (i) प्रमुख पात्र (ii) गौण पात्र।

प्रमुख पात्र में दादा मूलराज और बेला को लिया जा सकता है। और गौण पात्रों में कर्मचन्द, बड़ी बहू, मझली बहू, छोटी भाभी, परेश, और इन्दु आदि है।

संवाद योजना :- सूखी डाली एकांकी के संवाद सहज, सरल तथा प्रभावपूर्ण है। लेखक के सभी पात्रों के चरित्र का वैशिष्ट्य अंकित किया है तथा उसकी के अनुरूप संवादों की योजना की

बेला परिवार के अन्य स्त्रियों के समान रहना चाहती है। वह अपने लिए विशिष्ट स्थान ~~चाहती है। वह अपने लिए~~ की इच्छुक नहीं है। वह भी सबके साथ मिल-जुलकर काम करने में ही वह खुश रहना चाहती है। एकांकी के चरम सीमा में अश्क जी ने अपने लक्ष्य की पूर्ति का संकेत किया है। बेला का हृदय परिवर्तन होता है। वह सभी के साथ घुलमिल रह कर रहने लगती है। वह अपनी इच्छा से दादा जी के कपड़े धोने लगती है।

इस प्रकार अश्क जी ने मध्य वर्गीय परिवार के कुछ चरित्र को लेकर एकांकी की कथावस्तु का ताना-बाना बुना है।

पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

सूखी डाली एकांकी का पात्र इसी धरती से जुड़ी हुई है। या तो वे देवी, आभा से मण्डित है और या आसुरी वृत्ति को अपनाये हुये है सभी इस एकांकी में स्त्री की प्रधानता है। पुरुष पात्रों में केवल दादा मूलराज के चरित्र पर ही प्रकाश डाला गया है स्त्रियों में ~~सबसे~~ स्त्र साधारणतः ईर्ष्या का भाव देखा जाता प्रायः एक स्त्री दूसरे को अपने से ऊँचा नहीं देख सकती अश्क जी ने इस मनोवैज्ञानिक तथ्यों प्रस्तुत एकांकी में स्त्रियों के माध्यम से दिखाया है। मझली बहू, बड़ी बहू, छोटी भाभी, सब बेला की ऊँची शिक्षा तथा उसकी रहन-सहन को देखकर ईर्ष्या करती हैं, और उस पर व्यंग्य

"(अपने और अपने मायके के सामने तो यह किसी को कुछ गिनती ही नहीं। हम तो उसके लिए मूर्ख, गंवार और असभ्य हैं। यहाँ के लोगों को खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना कुछ भी नहीं आता। हमारे नौकर गंवार, हमारे पड़ोसी गंवार, हम स्वयं गंवार।"

बड़ी बहू, मझली बहू, छोटी भाभी, बेला के दोष गिनाते हैं। घर की नौकरानी रजवा पर बेला के कठोर होने की चर्चा होती है। बेला को घर का पुराना फर्नीचर पसन्द नहीं है। उसके लिए लाया गया मलमल का थान और लिहाफ भी उसे अच्छे नहीं लगते। कपड़े धोने का उसकी आदत नहीं है। इस प्रकार उसकी प्रत्येक बात पर घर में नाना कथी चलती है।

दूसरे दृश्य में कथावस्तु नया मोड़ लेती है। परिवार के मुखिया दादा को इस बात का पता चलता है तो वे बहुत चिंतित हो उठते हैं। उन्हें डर है कि कहीं पेड़ की एक डाल टूटकर सूख न जाये। अतः वे परिवार के सभी सदस्यों को एकत्रित करके समझाते हैं कि बेला इस परिवार की सबसे शिक्षित सदस्य है। और उसका सम्मान ~~की सबसे शिक्षित सदस्य है।~~ उसे जितना मिलना चाहिए उतनी नहीं मिल रही है। अतः सबको उसका सम्मान करना होगा। फिर तो परिवार की सदस्य की सभी स्त्रियाँ दादा के कहने पर उसके सम्मान में खड़ी हो जाती हैं। उसके आने पर सभी कहकहे बन्द कर देती। एक चुप्पी सी छा जाती है। इस आरोपित आदर से बेला और उसकी चिढ़ जाती है और दुखी भी हो जाती है।

Q. एकांकी कला की दृष्टि से सूखी डाली एकांकी की समीक्षा कीजिए ?

Ans- एकांकी कला की दृष्टि से सूखी डाली एकांकी को निम्नलिखित रूप में समीक्षा की जा सकती है :-

① कथावस्तु :-

सूखी डाली एकांकी की कथावस्तु एक मध्य वर्गीय परिवार से संबद्ध है। इसमें परिवार के तीन पीढ़ियों के पात्र हैं। तीसरी पीढ़ी में परेश नामक युवक पढ़ लिखकर तहसीलदार हो गया है। उसका विवाह एक सम्पन्न परिवार का जीवन ग्रेजुएट लड़की बेला से होता है। बेला के परिवार का जीवन स्तर परेश के परिवार के जीवन स्तर से ऊँचा है। उच्च शिक्षा एवं पारिवारिक स्तर के कारण वह ससुराल के सभी व्यक्तियों की ईर्ष्या का केन्द्र-बिंदु बन जाती है सूखी डाली एकांकी आरम्भ से अंत तक इसी इच्छा का केन्द्र-बिन्दु बन जाती है। इस परिवार की अन्य सभी स्त्रियाँ अशिक्षित हैं। परिवार की सबसे छोटी सदस्या बेला की ननद इन्दु है। इन्दु जो इस परिवार की स्त्रियों में सबसे अधिक पढ़ी लिखी है जो प्राइमरी तक की शिक्षा प्राप्त की है।

एकांकी के प्रथम दृश्य में इन्दु बेला की बुराइयाँ सामने खोलकर रखती है। वह कहती है —

चरमसीमा युक्त है।

'सूखी डाली' में संघर्ष द्वन्द्व से प्रसंगों की भी योजना है पर संकलन-त्रय का पूर्ण निर्वाह नहीं हो सका क्योंकि एकांकीकार ने एक ही अंक में तीन-तीन दृश्यों की योजना की है अतः स्थान की एकता भले ही संभव हो सकी हो पर कार्य व समय की एकता असम्भव ही रही है। एकांकी में दादा मूलचन्द, परेश, भाभी, मल्लू, बेला (छोटी बहू) छोटी भाभी मझली बहू, बड़ी बहू रजवा परेश और इन्दु आदि कई पात्र है पर प्रमुखता दादा, परेश, इन्दु और छोटी बहू को ही प्राप्त है तथा उन्हीं का चरित्र-चित्रण भी किया गया है। साथ ही कथोपकथन भी कहीं तो बहुत बड़े-बड़े और कहीं अत्यन्त लघु है लेकिन उनमें कथा गतिशील करने व पात्रों की चारित्रिक विशिष्टताओं को स्पष्ट करने की क्षमता अवश्य है। है। अश्क जी ने अभिनयशीलता पर ध्यान रखा है और रंगमंच निर्देश भी दिये है लेकिन यह कहना कि सूखी डाली का अभिनय सहज संभव है सरल नहीं है। हाँ, प्रभाव एकता की दृष्टि से अवश्य इसकी उत्कृष्ट एकांकी कृति माना जा सकता है।

उठो दादा जी आप पेड़ के किसी डाली का टूट कर अलग होना पसन्द नहीं करते पर क्या आप चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाल सूख कर मुरझा जाये दादा संतोष से हुक्का गुड़गुड़ाने लगते है। घर का वातावरण खुशहाल हो जाता है।

सूखी डाली एकांकी की विशेषताएँ —

तीन दृश्यों की 'सूखी डाली' सामाजिक एकांकी है और यह एक शिक्षाप्रद नाट्य कृति है तथा एकांकीकार ने इसे कुटुम्ब-व्यवस्था का विवेचन करते हुए कौटुम्बिक समस्याओं को हल करने का सहज तरीका प्रकट करते हुए एकांकी के महत्वपूर्ण पात्र दादा जी से कहलाया है यह कुटुम्ब एक महान वृक्ष है। हम इसकी डालियाँ हैं। डालियों ही से पेड़ है और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढाती है। मैं नहीं चाहता कोई डाली उससे टूट कर पृथक हो जाय ... मेरी आकांक्षा है कि सब डालियाँ साथ बढें फलें-फूलें जीवन की सुखद, शीत वायु के परस से झूमें और सरसायें। पेड से अलग होने वाली डाली की कल्पना ही मुझे सिहरा देती है।

'सूखी डाली' की कथा आदर्श-प्रधान है और उसमें जीवन की वास्तविकताओं का स्वभाविक चित्रण है कथा संविधान पर पूर्ण ध्यान देते हुए मनोवैज्ञानिक के निर्वाह पर पूर्ण ध्यान रखा गया है। कथा के आदि, मध्य और अन्त तीनों ही अंग सुस्पष्ट और पूर्ण है तथा एक-एक घटना को स्पष्ट करता हुआ एकांकी का अंत ...

ध्यान रखने लग गये है। खानपान, कपड़े सब में उसकी इच्छा अनुसार परिवर्तन करने की उसे छूट मिल गयी है। बेला बेचारी परेशान हो गयी इस नये परिवर्तन से वह परेशान होकर के परेश से कहती है कि अब वह यहाँ एक पल भी ठहर न सकेगी। परेश ने उसे आड़े लिया जब सब तुम्हें काम देते थे, कुछ कहते थे तब तुम्हें अपमान सा प्रतीत होता था आज सब सम्मान दे रहे है ये भी तुम्हें नहीं सुहाता, तब तुम्हें चाहिए क्या बेला स्वयं ही नहीं समझ पाती थी कि उसे क्या चाहिए।

आखिर उसे इन्दु जब कपड़े मांगने गयी तब उसने पूछ ही लिया कि ये सब के सब मुझसे पराये का सा व्यवहार करने क्यों लगे हैं इतना आदर सम्मान क्यो दे रहे है? तब इन्दु ने रहस्य का उद्घाटन किया कि दादा ने ही सबको ऐसी आज्ञा दी थी, क्योकि वह चाहते है कि सारा परिवार एक विशाल वट-वृक्ष की भाँति रहे। और उसकी एक भी डाली अलग होकर सूख न जाये। बेला दादा की भावना समझ गयी। उसने इन्दु से कहा कि इन्दु उससे स्नेह का व्यवहार करे आदर से न बुलायें। और स्वयं इन्दु के साथ कपड़े धोने चली गयी जब दादा ने देखा तो इन्दु को बहुत डांटा। इस वक्त सिसकती आवाज में बेला बोल

इरादा की लेकिन दादा ने विशाल बरगद के पेड़ का उदाहरण देकर भी उसे समझाया जब तक मैं हूँ यह हो ही नहीं सकता। परेशा के जाने के पश्चात सारे परिवार को इकट्ठा किया सबसे कहा गया - कि वे बेला का आदर करें उसकी आलोचना ना करें और उसे पहनने-लिखने दें उसके समय को व्यर्थ ना कर अगर किसी ने ऐसा बर्ताव किया तो दादा ने अपने प्राण त्याग का भय भी दिखाया।

अब बेला के लिए नयी परिस्थिति पैदा हो गई। सब के सब बेला का अत्यधिक आदर करने लगे बड़ी भाभी से लेकर बेला की सास से तक उससे अत्यन्त सम्मान का व्यवहार करने लगे इन्दु की जिसे बेला की लिखने पढ़ने से सबसे अधिक आपत्ति थी, वह भी बेला का बहुत विनयपूर्वक बुलाने लगती है बेला इस नये परिवर्तन से लग उठ गई थी कभी उसे समझ ही पड़ती थी कि वह घर कौसा है? लोग कैसे हैं? दो दिन पहले सभी उस पर बरस पड़ते थे आज ऐसी कौन सी बात बन पड़ी है कि सब का सब आदर करने लगे हैं। कोई उन्हें किसी तरह का काम नहीं करने देते इन्दु स्वयं उसके कपड़े को धोने को मांगती है। सब उसका समय व्यर्थ न जाये उसका

आदि की भी बहुत शुरू आलोचना हुई। परिणामतः सब के मन में यह धार कर गई कि छोटी बहू बेला ससुराल को अपने मायके से हेय समझती है। और घृणा करती है, अतः ~~सब की सब ने~~ सभी मन-ही मन बेला की विरोधिनी बन गयी। इधर लाला कामचंद दादा की माँ को बेटे को इस बात का पता चलता है। उन्होंने दादा जी को कहार की परेश और बेला का निर्वाह इस घर में सब के साथ अब नहीं होगा अब वह अलग घर बसा कर रहेंगे।

दादा मूलराज को इससे बड़ा आघात पहुँचा सारे परिवार को वे एक विशाल वट वृक्ष की भाँति समझ रहे थे और इसका प्रत्येक से जुड़ा जान कर रहे थे लेकिन आज उसकी एक डाली या तो वृक्ष की रहते हुये भी सूख जाती है या अलग जाकर उस वृक्ष की पीढ़ियों से अर्जित मर्यादा को मटियामेट कर देती है। दादा इस मामले को बड़ी गंभीरता से सोच रहे थे, कि परेश अलगयोझा (अलग) हो का प्रस्ताव ले कर आया, अत्यन्त धैर्य और विवेक से अपनी और बेला की परिस्थिति

दिखाई दे रहे थे; । छोटी सी बात से भी वह
झुंझला जाती थी । स्वयं शिक्षित थी, ग्रेजुएट
थी और घर में पति परेश को छोड़कर कोई
इतना पढ़ा लिखा नहीं था, अतः घर के और
लोगों से उसका बौद्धिक दुराव रहता था
सहजता से सब के साथ घुल-मिल जाना
उसके लिये आसान न था । दूसरी ओर घर
की स्त्रियाँ जो अनपढ़ थी, छोटी बहू से
अपनापन जोड़ नहीं पा रही थी । परिस्थिति
स्वभाव के कारण छोटी बहू इन सब के लिए
आश्चर्य का विषय थी, जो दूर-दूर रहती हुई
और तरह तरह की बातें करती हुई बेशक छोटी
बहू की अपनी दुश्मन दुश्मन जान पड़ती है,
थी । घर में पढ़ी-लिखी था एक मात्र लड़की
इन्दु थी व जो सबकी दुलारी थी, दादा उसे
बहुत प्यार करते थे, लेकिन उससे भी बेला की
पटती नहीं थी ।

एक दिन सलके से काम करने में
असमर्थ घर की पुरानी नौकरानी रजवा से
बेला की ठन गयी और उसे काम पर से
हटा दिया रजवा रोती-बिलखती इन्दु के
पास गई और सारे स्त्री मंडल में यह बात
प्रमुख बन गई सब ने जी भर कर बेला को
बेला के नापसन्द किये हुये कार्य जानी पर

और उनके कई पोते थे सारा घर भरा-पूरा बच्चों की मधुरी शरारतों से कुमली गुंजता रहता था। दादा के छोटे लड़के का लड़का अमर नायब तहसीलदार के पद पर नियुक्त हुआ था और उसकी शादी लाहौर के एक धनी प्रतिष्ठित खानदान की सु-शिक्षित लड़की के साथ हुआ था। लड़की पढ़ी-लिखी थी संस्कारी थी अतः घर में सब उसका आदर करते थे वे लाला के घर में छोटी बहू के नाम से पुकारी जाती थी। वह बी.ए पास थी। नायब तहसीलदार साहब बैसा की पत्नी थी नाम था बेला अपने घर में वह स्वतंत्रपूर्वक पली-बढ़ी थी, और उसे आधुनिक सभ्यता के प्रति गहरी रूची थी। मूलराज के घर में पुराने विचार के लोग थे, अतः इसलिए छोटी बहू बेला के विचारों से सब लोग उसे नापसंद करते है, बेला को घर का सामान कोनीघर आदि जो पुराने ढंग का था वह उसे अनरवता था इस घर के वातावरण के साथ अभी उसका भावात्मक नाता नहीं जुड़ा था। और घर के काम-धाम रस्म-रिवाज सब उसे अपने पिता के घर के वातावरण से भिन्न

सूखी डाली एकांकी का सार प्रस्तुत कीजिये

सूखी डाली श्री उपेन्द्र नाथ अश्क द्वारा लिखित एक अत्यन्त प्रभावशाली / आकर्षणात्मक एकांकी है। इस हमारी सभ्यता की नींव जैसी संयुक्त परिवार प्रथा आज टूटती जा रही है, किन्तु उस प्रनालिका के मूल में जो शक्ति एवं संसार की भावना थी उसका दर्शन लेखक ने इस एकांकी के माध्यम से कराया है

प्रस्तुत एकांकी के प्रधान पात्र दादामूल-राज सम्मिलित परिवार के बहुत बड़े पक्षपाती है वे चाहते थे कि उनका सारा परिवार मिलजुल कर रहे तथा उनमें किसी भी तरह का मनमोटाव ना हो 72 वर्ष के जर्जर अवस्था में भी वे सारे परिवार को पात्रों और सम्भाले हुये है

दादा मूलराज का एक बड़ा लड़का था जो अंग्रेज सरकार की ओर से लड़ते-लड़ते काम आया था (शहीद) हुआ था अत: इसलिए दादा को सरकार की ओर से एक मुरब्बा जमीन दी गई थी अपने पुरुषार्थ से दादा ने उसे दस मुरब्बे जमीन बना लिया था और फार्म के आदि बड़े पैमाने पर जमाया था, सो पैसे की कमी नहीं थी, अर्थात् खाते-पीते थे चैन से रहते थे। दादा के और दो लड़के।

संवेदना साथ सरल अभिव्यक्त होती है, प्रवाह की सरलता और [illegible] संगीतात्मकता की सामान्यता सफल होती है, यह गीत लोकप्रिय नहीं होते। (कविता) आदि रचना रूप ही उपन्यास का रूप ले सकती है [illegible] कहानी का [illegible] अभिव्यक्ति [illegible] [illegible] नहीं होता [illegible] रूप लेता भी बड़ा आकर्षक होता है।

कहानी में जीवन का कोई एक पक्ष ही प्रतिपादित होता है जैसा मुंशी प्रेमचन्द [illegible] ने कहा है कि कहानी के [illegible] में [illegible], [illegible] की [illegible] [illegible] रूप की [illegible] हो सकती है। इसमें किसी [illegible] के सम्पूर्ण जीवन का [illegible] नहीं होता।

उपन्यास क्या है?

साहित्य के विधाओं की एक गद्यमय विधा का नाम 'उपन्यास' है। उपन्यास के कथा के माध्यम से मानव जीवन के समग्र चित्रण एवं विस्तृत विश्लेषण की स्वाभाविक क्षमता विद्यमान है। इसमें घटनाओं के द्वारा संश्लिष्टात्मक जीवन की अभिव्यक्ति होती है, मानव जीवन की गाथा को वास्तविक शैली रूप में प्रस्तुत करना ही इसकी अपनी विशेषता है। उपन्यास में मानव जीवन के सामाजिक पहलुओं, जैसे मानसिक भावों एवं भावनाओं को घटनाओं के माध्यम से चित्रित किया जाता है।